श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ६

नवम्बर २०१९

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. निरोगी काया..... के पालन से मिलती है।
२. परोपकार करना यह मानव मात्र का ..... है।
३. जिनकल्पी साधुओं को..... का संथारा होता है।
४. ऐरावत क्षेत्र और हिरण्यवंत क्षेत्र के बीच में ..... पर्वत है ।
५. भक्त वत्छल प्रभु ..... चरण शरण सुखदाई ।
६. मन को शुभ लाभदायी, निर्वद्य प्रवृत्ति में जोडना वह ..... प्रवृत्ति ।
७. कमठ का जीव सातवी नरक से निकलकर वनमें ..... हुआ ।
८. कितनेक जलचर प्राणी जातिस्मरणादि ज्ञान के द्वारा ..... भी स्वीकार करते है ।
९. श्रीयक के ..... का गुण उसे आगे आगे के पच्चक्खाण का स्वीकार कराता गया ।
१०. श्रावको की कुछ व्यसनों की ..... और भोगविलास में चकचूर बने है ।
११. आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढते साधु के लिए स्त्री..... करने वाली है ।
१२. प्रभु पार्श्वनाथ कुंड सरोवर के किनारे ..... ध्यान में लीन थे ।
१३. आज दुनिया में करोडो कौभांड होते है, उसके पीछे..... ही कार्यरत है ।
१४. अरवींद राजा का..... नामक पुरोहित था ।
१५. माया अगर आश्रव है, तो ..... संवर है ।
१६. यह विवाह महोत्सव ..... पात्र है ।
१७. बडों के तरफ से मिले हुए अनुभव के ..... को स्वीकार करता है ।
१८. जहाँ पाप का प्रवेश है, वहाँ..... का प्रवेश संभवित नहीं ।
१९. व्यंतर ने जैन संघ में..... फैलाई ।
२०. सर्प शुभध्यान में प्राण त्यागे और धरणेन्द्र नामक भवनपति देवों में ..... हुआ ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. भंड याने पात्र तो मत्त याने क्या ?
२. श्री पार्श्वप्रभुकी शिबिका का नाम क्या था ?
३. शिशुपाल वध काव्य किसने लिखा था ?
४. राजगृही नगरी के कसाई का नाम क्या था ?
५. भवभव से थके भवमुसाफिर का विश्रामस्थळ क्या है ?
६. राजीमती के भाई का नाम क्या था ?
७. धर्म को पाने के लिये किसकी आवश्यकता है ?
८. मुहपत्ति के उपयोगपूर्वक निर्वध वचन में प्रवृति वह कौनसी वचनगुप्ति ?
९. रोग का घर कौन ?
१०. जो जीव गर्भ से उत्पन्न होते है वह क्या कहलाते है ?
११. चैत्यस्तव सूत्र का दूसरा नाम क्या है ?
१२. यक्षदिन्ना साध्वीने भाई को किसका पच्चखाण दिया ?
१३. पिपासा याने क्या ?
१४. श्रीयक के बडे भाई का नाम क्या था ?
१५. शंखराजा की रानी का नाम क्या था ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. वह २) मम ३) कच्छव ४) लद्धे ५) दुवीस ६) गह ७) चम्मय ८) भरह ९) पूअण १०) मसी ११) मणगुप्ति
१२. हियअेण १३) गो १४) भतो १५) अंतरदीवा १६) भयवं १७) जई १८) तत्थ १९) मेहाअे २०) अन्नाण

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) विमान	१) गणधर	६) मोह	६) अपराजित
२) बडों की	२) कपडे के व्यापारी	७) नवकल्पी विहार	७) मार्गदर्शन
३) उद्यान	३) महा यशस्वी	८) ब्रह्मचारी	८) भुजपरिसर्प
४) छिपकली	४) रैवतक	९) धर्मिष्ठ	(९) साधु
५) कुरंग	५) निद्रा	१०) पार्श्व	१०) भिल्ल

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. उवसग्गहरं सूत्र की मूल गाथा कितनी है ?
२. श्री पार्श्वप्रभु का आयुष्य कितने साल का था ?
३. श्रावका का असठ नामक गुण का कौनसा नंबर है ?
४. कितने दिन तक पार्श्वप्रभुने शरीर को वोसिरा दिया ?
५. उर्ध्वलोक में मेरु पर्वत उपर पांडुकवन की उँचाई कितना योजन है ?
६. वीतराग देव के पास श्रेष्ठ भवनिर्वेद आदि कितनी वस्तु की याचना की गयी है ?
७. भावना कितनी है ?
८. मुनिमजी ने शेठ को कितने रुपयों का लाभ कराया ?
९. श्री नेमनाथ प्रभु और राजीमती का कितने भवों का संबंध था ?
१०. आगम में आहार के कितने दोष बतायें गये है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. आश्रव के द्वार बंद करना संवर है ।
२. कितने मत्स्य प्रभुजी के आकार के होते है ।
३. कालसौरिक कसाई अयोध्या में रहता था ।
४. भूमि देखकर शुद्ध निर्जीव मार्ग पर चलना वह ऐषणा समिति है ।
५. संपत्ति के बजाय सद्‌गुण कीमती होते है ।
६. पदमावती देवी ने प्रभु के पैरो तक पद्मकमल की रचना की ।
७. यक्षदिन्ना साध्वी ने श्रीयक को नवकारीशी की प्रेरणा की ।
८. वराहमिहिर श्रीयक का भाई था ।
९. श्री नेमनात प्रभु का गिरनार के उपर निर्वाण हुआ ।
१०. 'मेरे दिल में जिनदेव प्यारा' स्तुति में सिर्फ पार्श्व प्रभुका नाम बोलना चाहिए ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. आज की दुनिया के पास सबकुछ है ।
२. प्रभु के केवलज्ञान की बधाई वनपालकने श्रीकृष्ण वासुदेव को दी ।
३. ये भी युगलिक क्षेत्र है ।
४. वह करुण स्वर किसका है ।
५. पर हाय ! वह सिक्का खोटा था ।
६. राजपुत्र को तपजप का क्या परिचय ।
७. देखने के लिए आँख खुली रखनी ही पडती है ।
८. अतः उनके लिए तु अब विपरित प्रयोग कर ।
९. जन्म-मरण का चक्र चलता ही रहेगा ।
१०. परमात्मा के शासन पर परमात्मा के उपर की श्रद्धा से जरा भी चलित न हो ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. खेचर जीव २) जावंत केवि साहू सुत्र का अर्थ लिखे । ३) सुलस का मन चिंतन
४) श्री पार्श्व प्रभु का छठ्ठा भव ५) प्रज्ञा और अज्ञान परिषह ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अॅकेडमी, श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालीसगांव - ४२४ १०१. जि. जलगांव, मो. ९०२८२४२४८४
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com